कि.चीर.की.चीषश.कुष.चिचा.ज.चबूर.ततु.जश्रालचा.चर्चेचश.शूरी

यविष्यः नयमः निषे । यन् वः के षाययेया

सरमाक्रीमायक्रमार्जे मात्रमार्जे मात्रक्तात्। स्राक्ष्मश्रायञ्च ते 'श्रुव'स्व स्थ्र' स्रव माने वा। ब्रेन्यमा अर्केन् रेविया पर्येन् वसमा हेन्यो सु। विवानु द्वयान्यायाये रामी दिन सदयाना सवन स्ति निमाना ने त्यास्त्र ना तक्या स्ति। निट.र्. प्टर्नानी हैं ब.स.स् प्टिंटश.स्टा। निट.र्ने प्टर्म नम्भ निट क्ष्य मक्ष्म निक्ष माने । वक्रे मेर्यसप्रह्मम् मुग्रम् क्यान्यान्यक्रके वास्त्रस्य वास्त्री वादक्यात्वी। सरसाक्षरायर्ट्सान्त्राय्त्रार्यायुरामी पङ्गेषायर हैं नसाह। न्युरायि ययुः स्नारिमार्देष र् पर्के बिर्पत्वमा विर्पत्र मुप्ते ही र्ना इसस्य प्राप्ते के स्मी प्राप्त सके र कुस्पर सद्दश्चा मुद्दश्ची खुद्दश्ची खुद्दश् श्चारमाथमायन्याने। विक्षिमाङ्गिरायविष्यकुष्यकुष्युष्ट्राता व्यासार्गुष्यायन्यासी ।रेशसार्वे

यद्गान्ते। यदे यर मनिम्रायदे मन्र राक्षेत्र यति ये पदे द्रमाया सहया द्रमें राक्षे ते राह्में त्र या सारत यमायन्यावरावरावयाकेममाग्री स्वान् मासुरमाने। हे स्निन्नु खुरास्त्रकेषमायमा निवार्से रान्न ८ वर्षायव द्वारे विषये विषय विषय है दिवा है दिवा है से विषयी ये दि दि ये से प्रिय के दिवा है है है वर्क्के प्रवे प्रमः नु वर्षे प्रमः प्रावे हि प्रमः प्रावे प्रमः प्रवे । विषे प्रमः विष् । वर्षे मंत्रे सार्ष्य वर्षाविद्यांश्री विर्दराने वार्तुमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रम् वार्यान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्र पर्ट्रमास्वरप्त्राणी भाक्त्रिंगणी प्रित्राचि सार्या समायापञ्च पिर्द्रियास्वर प्रियास्वर प्रियास्व प्रियास्वर प्रिय प्रियास्वर प्रियास्वर प्रियास्वर प्रियास्वर प्रियास्वर प्रियास्व प्रियास्वर प्रियास्वर प्रियास्वर प्रियास्य प्रत प्रियास्व प्रत वर्षार्त्याम् सुःसुःसुः वर्षायाद्वायाः हो। निः ह्वीः ह्वीः द्वाः वर्षायविः वर्षाः पुः वर्षे रासके रिहेषः नर्भेरन्दर्भ अर्केन्द्रेम्यासुनायस्यान्त्रार्द्धना ने न्नायादिन स्नन्त्रेमानर्देन्यरम् वेषयात्रषारायात्रयात्रयात्र्यात्र्यात्रयात्रे व्यवसाउत्ग्युरायते वर्षे अर्धे तेषायी वहिषाहे वत् वर्षे र्सेनामा कुमायमानासुरमार्से। १५ प्राविक ५५ महिंगावक ५ ना प्यमा गुरा रासु रका प्यमाय १ से मा स्। नि क्रिंट निषर पु त्वाद विवार्षेट क्षा हिन ही क्रिंब पह तर विषाद है का ने निषय विषय यक्षे चे प्रदे द्वायक्ष्व प्रस्तु क्षे विषयम् मुस्य या क्षे विषये प्रस्त प्रस्त विषय विषय चोष्यात्रवे त्रात्रे त्यात्रे रावयासक्षयास्र रात्रे ह्यापायराव्यव्यास्त्री े द्धरक्षे। दे हे मन्द्रके पन्नारुनमे द्वेत पास्ट्रेन पास क्षिप्र क्षिप्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र नुष्टी सी विद्याता सी. र कि. सा. कु. र कि. सा. कु. र त्री र त्री र त्री र त्री र त्री कि. र विद्यात्र त्री र त हे। अर्दे व्ययः मुसुरस्य प्यरस्य क्षयः क्षयः क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र प्रेत्वे क्षेत्र प्रमाधिक व्या देवे स्क्षेत्र प्रामु यब दि स्री क्रु. ही ब की साम चया ततु सम्बर्गा अथव स्तूर पर्टे र पर्टे तायतु सम्बर्गा चर वि साम स्त्री ताया ययस्तर् योषस्य कैतार्तु प्रायत दी व विद्या स्था यो स्था प्रायत विद्या स्था प्राय प्र च्याम्बर्धान्या यदे मिनेन्बर्धे दिने मुनेन्बर्धे दिने मुनेन्द्र मुनेन्द्र मुनेवर्धि स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्धे स्वर्ये स् न्यान्नान्यत्यम्याय्येन्ने । यान्यस्केनान्ने ये प्रिति दे दे दे दे दे दे हु रास्रे खुयाद्रा कु यारायर ब्रायटार्स्य देश देशस्त्र क्षा का नाम सुनाय ना न्यस त्या स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय मुरुमात्मा अक्तूर्यात्मा क्राङ्केट्मा इंटर्स इंतर्या क्रियाची क्रि ष्ट्रि: इस्तर्भाती त्रमालया निर्माती स्त्रिमा स्त्रिमा स्त्रिमा स्त्रिमा स्त्रिमा स्त्रिमा स्त्रिमा स्त्रिमा स् द्य देवारयाची हे हे वारव क्षायन राम्य राम्य देवार वार्षेत्र वार्षे ततु हैं है . चेरे ब. ची . चेष स. चार्य रे . चे . चेर . पद लियाचर्गे न प्वे ब रहेब निवायमा द्वारा पदि हैं है जान ब की पर्गे न पर्म ब ब ब ब ब ब पर्म न पर्म न गर्छना परक्षा पत्नु नाषा या है । इसका रहन पर्सू र रहें। यह रहें है । यह राष्ट्री ना से पार्ट पर्से न रहें । यह राष्ट्री न से पर्से न राष्ट्री न राष् व्यथान्द्रत्यराये न्यथार्द्र वाषायास्यायात्यायात्या देशा देशवायवायावे वाचे प्ययायदे राद्रेश ૡૢ૱ૠ૾૽ઽ૽ઌૡૢ૽ઌૢૹઌઌ૽૽૱૽ૣૼ૱૽૽ૢ૽ૺ૽ઌ૽ૼૹૢૻઌૹૼૢૡૢ૱૽૽ૢઌ૽૽૾૽ઌ૽૽ઌ૽૽ઌ૽૽ૹૢ૽ઌૹૢ૽ઌૹૢ૽ઌ૱૽ૻ૱ शुःईनिःहै। श्रेन्यम् अन्द्रम्दे म्याङ्क्ष्यम्यम्यस्य प्रम्य चुनः चुनः चुनः व्याप्तः म्याङ्क्ष्यः व्याने मः चुनः चुनः व्या र्देशसाधिकक्षेव कु देवायायाय हुन्यावे कि विवाद स्थान सामित्र कि विवाद स्थान सामित्र स्थान सामित्र स्थान सामित्र सर्वेद न प्रमा क्रिक प्रमा क्रिक प्रमान क्रिक चतु रूर्। विर्यासी यो जा रेर्। विजायतु जी या कु या विष्णी श्री यो शिक्षा की स्था की सामित्र विष्ण

यहूर्या है 'दे 'सं 'स् रायु 'पर्टे 'स्ने मंसूर्य प्राप्त पर्ट्या है 'दे सार्य पर्ट्या है 'दे सार्य पर्ट्या है 'दे सार्य पर्ट्या पर्ट्या है 'दे सार्य पर्ट्या है 'दे सार्य पर्ट्या है 'दे सार्य है सार्य पर्ट्या है सार्य पर्ट्य सार्य पर्ट्य सार्य पर्ट्य सार्य सार्य पर्ट्य सार्य सार्य पर्ट्य सार्य सार सार्य सार सार्य सार

यालका वाल्ल वाल्ल

क्चे ॱङ्गे ८ॱ५¸ॱर्पे ५ 'य'यम्भ 'दे ८ 'म्यापानिक 'दि क्यापानिक 'विकास क्याप्तिक 'दे 'विकास क्याप्तिक विकास क्या อูรรัพรูา भेगमे द्वी देव प्रमान अर्के न देव स्कूट दु प्रमार्थे न पाने न प्रमान कर का न मानि स्वार्थिय मित्र यर्वे चे भारति हैं से बे स्वीया है र जयर व र व र से र वी स्त्री से विवास यर यर्पी अर्केन्द्रेन् ने श्री 'न्य स्थिन्य राये 'यन्ययान'न्युयायान्य नियायान्य प्रकेन्द्रेन्य अर्केन्द्रेन् के ने स्थिन स्रिन्याने म्ह्रेंब्यान्दर्धे र द्वित स्निन्याने र निल्वा विषाने विषाने विष्याने र द्विताने न स्विताने न र्देशसम्बन्धन्यम्बन्धसम्बन्धन्यस्य मन्त्रम्थन्। देखर्दिन् चे स्वर्धे प्रवेमन द्वे स्वर्धे प्रवेमन दे क्षर.पुट.क्रुच.त.क्षर्भग्यी.सूज.च.र्झेटश.तपु.अर.ल.चर.हु.हु.ची.तपु.चीट.क्षेच.पुट.खुच.श्रीश.त.ट. क्षे.विटाट्ट्याङ्ग्रें राजभाक्तीःक्षे बाल्त्रियाने लोबा विटाने वे स्रायणा ज्येव विवाय लेना ने वे क्रुः हे बा तमाई त्यस्यामी मान्द्रियाक्तु मान्नि मान ब्रिम्मार्थियायम्प्रित्। देव्यम्पर्वे प्रमायदेवि देवानु यद्वात्वयानु राष्ट्रिया अर्के दिन्न प्रदेव सर्व द्वें में रामा के नमा निमान पार्ति ना प्रित साने राहें मार्थ पत्र पत्र पत्र मान्य मी द्वार सम्मान माने मी देरःॡॅबॱऒ॔कॅदॱहेबॱदयुषाॱॻॖॏॱयदेॱदटॱयदःयवेॱळेबॱयेॱवेवाॱऒ॔दॱयःऒॿ<u>।</u> र पर्दे 'नर क्री 'तु र ब्रिंद 'क्र 'की 'द्रिक्ष परित्र दें 'क्रीं च 'द्रिक 'श्रम शक्त अप 'ने श 'ग्री श हैं 'या पत्ने हश' यदे 'तु भाववि र क्वि भावश्चर भार्दे 'हे 'मात्र तु 'र्धे न के भारत र रेदे 'र्खे 'क्कु भावनाव 'यभावतु र पाते 'धे भ वसःश्वमा यदे द्रमः विवाक्षणार्थे दिन्य द्रमः स्वान्य यो वासुन दर्भावस्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य केशमंद्रे मान्याधेन त्यामान्य सारान् मन्य स्वराधिक केशमंद्रे मान्य दे 'पट 'कन' के शहे 'द्रया श्रेनश ही व र्ने ऋूर संभातकी द्रभः ५ किं बर्रे र्यूष. ञ्चनरान्त्रुंनाःयनाःवटःयदेःदरःकुरुःग्रीःञ्चनरुःधद्रायाः

ताक्षकाक्री, प्रस्तावाक्षिक्षकाक्षक्ष क्षिण्याक्षकाक्षक्ष विस्ताक्ष्य विस्ताक्षय विस्ताक्

ग ई.इ.च्निट्यत्त्राक्षात्त्र प्राची श्राचा की प्राचित्र की प्राचित्र प्र

र्च स्त्री स्त्री प्रक्रम स्त्रा त्रा त्र प्रक्रम स्त्रा त्र प्रक्रम स्त्र प्रक्रम स्त्रा त्र प्रक्रम स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त

यदे र्हे सु नेवा सूर वळेर य दिवा गुर र्थे रा

- त्रात्त्रात्त्रस्यात्त्रः विषयः व विषयः विषयः
- ल्या विश्व त्याप्त त्या स्वाप्त स
- सिट के ब्रायुक्त क्राय में कि व्यायुक्त वियानी स्था कि व्यायुक्त क्षित क्षित

न्नरंगे मुयाधिका कु:कॅक कुं गावका दे कुं दें कि कुं गाव दिन प्रति मुयादर । कुं कॅक पेरि कि कि दे^ॱकुंवर्धेदेॱविचर्गुः दें ख़्दे ब्रह्मे चै पू व्यद्भे दें अपहरूप वु चर्चे प्रेव्हें विहर्दे दु खुंह व्यक्षेम् अपू देवे विः मुन्नु मृन्नु मार्के कार्येद प्यवे प्रे पे पे प्रे प्रमुप्तर्यमाने स्वाप्त प्राप्त प्रे कार्ये प्राप्त त्रु क्रि. त्याभानि म् क्रि. भारति मास्य म नुयाधिक बिटा देरा है कायाची निषायनुगमा देवे किटा ही गमाणी मिटा ने गम्म मार्थिक क्रमार्थे हमा यदे ॱक्षें 'र्स्चे नम्'ग्री 'कु 'स्व' ने 'पकु न' ने 'प्य 'र्से न' क्ष नम्ये 'पक्ष नम्यदे 'रे 'प्येन 'र्रे न 'रे 'स्व क्ष 'र्य क्ष 'र्य मे ज्ञामाळ्याने के फ्रांचज चु चाराने विभागम्युरमायवे चर्मयाचळ्याधेन। क्षेत्रयम् यायासर्वे रे ब्रमःक्रियासेवे विचान् में क्रियाचे स्त्राच्याच्याच्याच्याचे रावनान्वे नामव्याच्याचे व्यास्त्राचा स्त्राची स्त क्ष्रेर्यः (विभव्यः भार) दूरमात्रमार्च्च मास्यास्या क्यायेवे विवासी स्यापे हार्गे क्रि च्याच्याक्तीत्र सुराये दे दे प्रेर्च कर्म दे के हिं काय अध्यास के मासुर साय विषय से का च्या की व्या की व्या की सुरांचेंदे 'रे 'सर् म'कु 'छर'र् '(सु'सम्म'ई) सम्माई 'पबर'सेंदे 'हेर'तुदे 'सूवार्थे र 'हेर'रे 'म्रमस्स वचचत्त्रं कुं चें दे ता (या र यो है) रचित्या क्या यह कें खे या चार्या यो वि नाप्पानमानु राष्ट्राक्षाप्पायम्। देरायराने पित्राने से लेया बेरा में राष्ट्रिया हे से मुन्नरामें राष्ट्रिया मॅिट हिर देश रे जि.ज.बे बेश हे व्हेट बर श्रेट देश राये है वाज है के दिर खेट खेट यह र द्वार्याणी विवाद्यास्त्राचा स्त्रीत स्वाद्यान्तर स्वाद्यान स्वाद्यान स्वाद्यान स्वाद्यान स्वाद्यान स्वाद्यान स

न्नेविक्कविक्वम्यायिः नृयान्तः क्रियायि रायक्षे रायवे त्याक्षे नाने रासकेनि हे वाकुतानु रिवे प्राक्षे ना गैषायर्भ्गेरायत्वेगाप्राप्ते अत्वावार्क्षेषाकुषाकुप्तवाक्षेपाणुषायवेरषायवे अर्केपाहेवाकेवारी विगा लूट तार क्षेत्र जू प्रकी त्रा बिश्व क्षा की क्षेत्र का की प्रक्ष का की का प्रका की का प्रका की का प्रका की का विष्ठ रायादेवे भूवार्थेत्। दे प्रमाने यात्र के मानुवास्त्र स्वास्त्र से प्रमान्य स्वास्त्र स्वास हैटनी 'धे मो 'दे 'इसमा 'ये 'हे मा हैट 'ह्म मा पदे 'हैं व 'ची 'ची मा मा मो 'धे वा ' खु मार्ट मा मु दे सकेंदर हेबर्भेबर्रुक्तिवर्धिविषार्धेर्यः इस्यादि अर्केर्दे ब्राच्याये अर्केर्दे व्याप्य स्ट्रिस्या स्ट्रिस्य मु : ब द द द प्यापित : प्याप्त विन्यत्ये मार्से मार्या में मार्या मार्या मार्या मार्या मार्या में मार्थी मार्थ देॱWE'र्र्टरेवे'सुय'रु'तु'ङ्केव'पबुग्रयंदे'रु शर्ड्यव्यथ्य'सुय'र्द्युश'सु'पङ्कव'य'ङ्कग्योद'रु'विग् है 'ये 'यर् है र 'श्रेर 'बेर । रे प्राणी 'झेरश सु है र कु 'यर क 'ये है जू 'या उं साय साय समावत तु सु मुशमाने र पु प्वते ः सु प्वतः विमायसमावन के प्यतः से द किता प्राप्ति द मिन प्यापदी दिना ग्राम्यमायकेवि प्रवे बिम्पु मुक्षिन्। वामुकेषायविम् म्रीम्प्रवे माम्याधिमारस्याधारा विकान्गावः क्रें र्ह्मे विषर्भिक्ष विदेश में दिवस क्रें क्षेत्र क्रें दिक्ष क्षेत्र क्षेत इस् प्रायान्य प्रायाच प्रायाच्य प्रायाच्य प्रायाच्य प्रायाच्य प्रायाच प्रायच प्रायच प्रायाच प्रायाच प्रायच प्रायच प्रायाच प्रायच प्रायच प् ૺૹૻૼ૮[ૢ]ૹૢૻૢૢૢઌ૽૽૽૽૾ૺઽૢ૽ઌૢૻૹ૾ઌૹ૽ઌૹ૽ઌ૽ૡૺ૱ઌૢૹૢ૾ઌઌઌૢઌઌઌ૱ઌ૱ૢ૽૽ૼ૱૽૽ૢ૽ૡ૽ૺૹ૾ૼૹૹ૽ૼઌૹઌઙૢ૽ઌૢૹૢ श्रेष्म व्यवे श्चि हा व्यव्यक्ति । से नासुस्रास्तर प्रवे प्रवे विश्वेष प्रदेश हो स्र स्थिय प्रवेशस्याना

वह त्यर क्रिंट क्षेत्र विश्व विश्व

क्ष्यात्पूर्यरात्र्येरात् भी शिर्षत्र तर्यात्र व्यवसायक्षणाळ्यात्र स्ट्री हे. त्युष्य त्ये त्यी याव्य स्टर्स् विवाय साल स्थ्र प्रकृत्वा चूर्स्य प्राय्त हिर्मा वे त्यु विवाय स्थात्र प्रायु साम्वर स्थ्र स्वाय वाय त्या स्वाय हिर्मा स्थ्र प्राय्त स्थ्र प्राय्त स्थ्र प्राय्त स्थ्र स्थ्य स्थ्र स्थ्र स्थ्र स्थ्र स्थ्र स्थ्य स्थ्र स्थ्य स्थ्र स्थ्य स्थ्र स्थ्य स्थ्र स् र्य रायम खेन स्थान स्था

इ.शक्ट्र्यां स्थान्त्र प्राप्त त्यां प्राप्त त्यां त्

क्रियत्विर्यात्वर्द्द्रमानी विराध क्रियां क्रियं क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्

ने विश्वास्त्र क्षे. दे विश्वश्वास्त्र व प्रति प्रसि है) या है यहा प्रति प्रति व स्वासि व स्वासि व स्वासि व स विश्वासे विश्वास क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र (सिस्त है) या है प्रश्नी व से प्रति विश्वास क्षेत्र व स्वासि व स्

इरामदे इसम्यू याद्रा हे पाद कुयायु कुयायु कुया हे द्री क्या (हे पाय) मर्गे द से द अर्थ हे द की ग्राद नवादात्राविः वृषाधिन् केटा ने राष्ट्रषाक्षणात्रमाक्षणात्रमाक्षणात्रमाक्षणाव्याकष्ठणाव्याक्षणाव्याक्षणाव्याक्षणाव्याक्षणाव्याक्षणाव्याकष्ठणाव्याक्षणाव्याक्षणाव्याक्षणाव्याक्षणाव्याक्षणाव्याक्षणाव्याक्षणाव्याकषणाव्याक्षणाव्याक्षणाव्याक्षणाव्याक्षणाव्याक्षणाव्याक्षणाव्याक्षणाव्याकष्ठणाव्याकष्ठणाव्याकषणाव् गुःति। १ गैं निस्रायदे गुःति। १ गागो रे गुःति। ६ निस्इंगुःति (दे निस्टायटः) यवे गादे निया बे द्वेंब परि पत्न नमानमा गुक के कर क्षान हैं पे प्येव है। कुया हे ५ क्या पर पार हु र हि प्तु ५८ १ ૢૢૢૢૢૢૢૢ૽૾ૺઌૣઌૢૢૢૢૢૢૡૢઌૢઌૣઌૢઌ૽૽ૢ૾ૢઌૣ૽૱ૺઌઌ૽૱ઌ૱૱૱૱૱ૢ૽ૢ૽૱ઌૢ૾ૢૢ૾ૢઌઌઌઌઌ૽ૢૼ૾ૢ૾ઌૢૺૢ૱૱ चर्लेचेशा शक्क् च.बेट.चेथेशा सं.हं.चबट.त्रा चेषश.चध्य.चव्रे.टेच द्र.बेटशा उक्तर.चा ६. व्यायार्श्रेन्यायार्ट्स्रे व पाये पार्वे र मुं मार्डि में प्रव हिं या के व में पार्के र दें प्रके र दें प्रके व क्रेर.योषेश.दर्रर.तीषे.द्रर.पर्वेयोश.ता.चे.क्षेयो.ताषे । शरश.क्षेश.ग्रीश.क्रु.तर्त्रेता.क्षेषे.प्रक्षेये.ताद्र. न्यम्भाग्याद्रात्रे त्त्रम् क्रियाचे राष्ट्रतात्रम्भाग्याद्रम् राष्ट्रम्भाग्यात्रम् स्विमार्गः स्विमार्यः स्विमार्गः स्विमार्यः स्विमार्यः स्विमार्यः स्विमार्गः स्विमार्गः स्विमार्गः स्विमार्यः स्वि तुः अर्वेदः यादे अद्युवः प्रेदः प्रेद विनाभर्षे रायाने 'न्यामी 'गुक' रनाय' सायवे 'नुवाधिक' क्रामे सा ने बाक अहक 'र्धे रायदी 'के 'सरासे ' सरमाकुमायागुन कुमामहित्न हैं नायदे सह र हैं र गुन त्यादन मिस्मा है तमामहित्या स्ति मन्न मासिन हैं र वोष्याः भू र.प. प्रेश्वतात्रात्रायत्रात्राय्यात्र्यात्रायत्रायव्यायव्याव्यायात्रायः विष्यायः विष्यायः विष्याय यावरी क्षे समाके।

यद्भायत् म्यान्त्र म्यान्त

क्षया-राव्याया पर्क्ष्यापञ्च पान्न पान क्ष्य पान्न प <u>ખુવા ખેતા</u>

ने निषा के त्या से निषा के निष्टि विषा ने स्ट्रिन की गा रे दे त्या वा वा विष्टा की वा विष्टा की वा विष्टा की व

पत्रस्थान्त्रे त्राचान्त्रस्य त्राचित्र त्राच्या त्राच त्राच्या त्राच्या त्राच्या त्राच्या त्राच्या त्राच्या त्राच्या त्राच्या त्राच त्राच्या त्राच्या त्राच्या त्राच्या त्राच्या त्रा

लाज्ञ प्याप्त क्ष्म प्रस्था त्र क्ष्म है स्ट्री से सम्बा अव प्रस्थ प्रस्

यम् विटान्नस्यक्षत्रात्त्र म्हिन्यं स्वर्धात्र महिन्यं स्वर्धात्र स्वर्यं स्वर्धात्य स्वर्यं स्वर्धात्य स्वर्यं स्वर्धात्य स्वर्यं स्वर्धात्य स्वर्यं स्वर्धात्य

चननि द्धाप्तर स्था अप्तर स्था अप्तर प्या क्षेत्र प्रा क्षेत्र क्षेत

त्त्र-श्वित् पृःसः व्रेषा व्याप्ति त्या स्वाप्ति त्या स्वापति त्या स्वाप्ति त्या स्वाप्ति त्या स्वाप्ति त्या स्वाप्ति त्या स्वाप्ति त्या स्वापति स्

क्षराम् अभगाक्षिणाक्षराये म्वन्यं स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्व

 यम से सम्

यद्वाय्वावर्त्तरक्षः श्वर्त्त्वस्य स्वरंत्वस्य विषय्वित्त स्वरंत्र स्वरंत्य स्वरंत्र स्वरंत्य स्वरंत्र स्वरंत्र स्वरंत्य स्वरंत्र स्वरंत्य स्वरंत्य स्वरंत्य स्वरंत्

चक्क. द्रभायाः इसालान्यात् । स्राथानायम् यात् व प्रायम् व प्रायम् व प्रायम् व प्रायम् व प्रायम् व प्रायम् व प्र इ.जया.श.याध्रेशायायायथा.वर्ट्र प्रायक्षेथातात्त्र्या.श्चरा.क्षेता.श्चरा. हे.यथायबेटा.यद्वेयातायरथाक्या. <u> रचित्रार्टा रचायर्ड्सासाञ्च प्या न्यायह्र स्नुप्रासहरायार्स्र न्याय्यायार्थः स्वाञ्चरा</u> क्षरान्ता क्रमाग्री क्रमाग्री क्षरान्ता स्थापना वह नामा से निता में नितान स्थापना नु (वियान्त्रिन न्युम्य) सेन्या पङ्गन्यवे ह्विन प्यन्ता केन में इसस्य ही प्याप देन या पहेन कुया चतु चर्च बर्च ता सु श हूं ट हि बा बी तति बाव मा सु ट । वट ततु कि ता विश्व मा से वा सु मा है । वे थिव। वट निर्मास मार्गी स्मिष्व निर्मु द सी पद निर्देश में निर्मास सम्मिष्य निर्माण निर्माण महिम निर्माण स्थित र्ब्हे न मसुस्रायस्य वर्षायायायस्यायार्से मसायदे रहे क्वे वर्षु हो सर्दे रहे वायु हारे हो पर अव्यर्भेन्थयः हे :ळव्:ह्। अर्देवयाव्यव्यव्यक्षिणः विषयः सेन्यव्यद्वेन दे द्वारे रे व्यव्यद्व भट्ट. संबर्ट . मर्टा ट्रें रचा. च्रें रच्ये त्यं त्यं ता अरम क्षा क्षा रच्चे रक्ष क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा क्ष केरपेंदिन्। हेब्ची मर्डिंदर्चूरपंदी गाब ई ब्रागा विद्वित कुयांपेंदे मुद्दर स्राय हेंब्रायंदे केंब्रा सके 'च'त्रा अ'तु 'र'ङ्ग 'सु 'र'त्र 'सु 'रत्र 'से 'री 'री श्री अ'सी अत्याप्तर 'चिर 'चिर 'सि च 'री 'री 'सी 'या ' देव हेर हैं ब पवे बिचक हे क चरका र्थे द। व का मा ज्ञा पवे खेव छे ब खेर पदि मा हे ब ब दे ये छे द पवे र षर्भःकुषःपदे 'तुषःङ्गेषःकेषःमः कुतः दे।

मिस्नान् स्वाप्तान्त्रम् से प्राप्ता वित्रास्य न्या वित्रास्य न्या क्षेत्र प्राप्ता क्षेत्र क्षेत्र प्राप्ता क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र प्राप्ता क्षेत्र क्राप्ता क्षेत्र क्

यशर्चिन'सर'प्रया'भिषाणु क्रिंन्यते 'त्तु 'श्लु 'त्रिं 'त्रु 'श्लु र 'खे अ 'से दिर' प्रकेत 'से क्रिं प्रकेत 'से के प्रकेत 'से 'से के प्रकेत 'से 'से 'से के '

त्त्राक्षा श्रालकाक्री स्वराह्मिकाल्च र्यु विकाल्च क्षात्र स्वराह्मिकाल्च स्वर

सट.ट्र.गि यदेयु.केज.स.क्षेट.तयु.शुट.लुब.खुट.गे इंट.बुब.चीचन्ना के.येच.क्षेट्र.विष.खुब.युज.कु.तयु.जू.की.स. यथेचन्ना के.सेट.टे.लेज.यटु.ज.चा.म्ह्र्य.चेचन्ना के.येच.क्ष्रंट.विष.खेन्न.च्य.जू.की.

৾ঀ৾৽ড়৴৽ঀ৾৾৾ঢ়৽ঀ৾ৢ৽৻ঢ়ড়ৢ৾ঀ৽ঢ়ড়ঀ৽ঀ৾ৼ৾য়৸য়য়ৢঢ়৽ঢ়৻য়৾য়য়য়৸ড়৾৽ঀঢ়ৢড়৾য়ড়ৢ৽য়ঢ়য়ড়৻য়৻ঀঢ়ঀ৽ঢ়ঢ়ড় स्रायम् स्रम्यायः इस्रम्यायः दे नातृना ५८ में ५ में भे के स्राप्ति या से ५ स्रम्य ५ सक्ष्य.सक्ष्य.म्. तत्त्र्रेट.यं त्राचे यातालय क्षेत्रे। लय यथा श्रमाताला लय त्राचे त्राचा क्ष्या ता क्ष्या त्र गुरासेर्प्यश्चे क्रिंस्स्रें उसप्पराधे र्वेषायी ग्वन्यम्बर्णन्त्रें रापारेशम्बर्णक्रासेर् য়ৢঀয়ড়য়ড়ৢ৾৽ঢ়ঢ়ৼ৾৾৽য়ড়৾৾ৼড়ড়৾ৼড়ড়৾ঢ়য়৾ঢ়৻য়ৢঢ়৽য়ৢ৾৽য়ড়৾৾৽ড়ড়ড়ড়৾ড়৽ড়ঢ়য়ঢ়৽ঢ়ৼড়৾য়ড়ৢয়ড়ৢ৽ঀঢ়য়৽ नानो से निरक्त ने से प्रिक्ते विकार भारत त्रा नाम भारते नाम भारति नाम भारति है । यदे मार्क्षण्यूर विषेत्र स्वर्ष स्वरं प्रकृषिय स्वरं मार्या इसार् हे विषय स्वरं है र प्रकृष्णि है। न्ये र क र के अ प्रवि र पर्के र प्रवे मान अ स् पु लि मा या अर्के न न न में मिन से प्रवे मान अ र वे से सि प्र गर बेर के अ दिने अ दिन के ति । वे प्याद्वर के प्राप्त क वश्चरवानेबान्तिषा ने वार्त्रिक्षा ने वार्त्रिक तमामान्य वा च रातासूर्यामान्त्र भारारा श्री राष्ट्र प्रमामान स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्र-रह्न से खुंब कर गुर में प्रबेंद ब्रथ न्वर्थ निर्मा कर परिष परिष दिव दिव की शाम कर में प्रवास में स्र वर्षे भेष के के विक्र के प्राप्त वर्ष के निवर में माने प्राप्त के के प्राप्त के के कि के कि के कि के कि के कि

ग्रम्भ के व 'यग्र 'विग'में 'र्ह्म

वर्ते प्राप्त भाषा युन्न भाषा ने प्राप्त ने त्रकृतः हे भः शुःदर्दे रः ट्वें बर्ताः क्षेत्रा रकारवाः द्वारा क्षेत्रकृत्विते भागते । इसाधराया विवास प्राप्त यर क्री में र पर क्षे विषय से विश्व स्वयं से के पर प्राप्त के के पर क्षेत्र स्वयं के प्राप्त के स्वयं स्वयं से के र्तु वाषायाः ष्राराणकारा क्षायां विष्या क्षायाः विष्या क्षायाः विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या मक्ताकितात्र्यसम्भलत्त्रे म्रह्मासी. हिंदातालय तर्यात्रमा रह्मासी. तर्यात्रे तर्ह्यासी. त्रवर्यात्रकुतुः वीर्यराजाश्वयःत्रमात्रक्वा श्रादविवाचतुः रास्वीयाविष्युः विस्त्रां विष् इस्रमार्खाः स्र र त्र्री प्रते वाम्रमाक्षेत्र धित प्रायदे वाम्राया किया वायाने वि प्रमापने न प्राप्ते ही प्रमाप २८। के. वश्वरात्र विवार्थे त्ययतात्री क्र. तर्र ४. त्रा ३२. ही. त्रा त्रा ही यात्रा ही त्रीययाके राम्नीयाप्तस्याया ने पर्येन यर सूरा। वित्रामन्यायने रासहयाया के निमार्येन के ना सर्वे । थे 'दे 'च'त्र 'म्व 'यस से 'च'रे 'यर से न्। स्र 'ये र 'चु 'चंदे 'म्वे र 'में कु द र मिंदे से माद्य में से स्वरं सम् स्र रे में र ले में रे ले में रे में र में रे में र में र में र में रे में र में में र में म हे ब के ब र्या दे 'कु व र्या र्से मुषा हे ब प्यवे ह ब प्याये 'हें ब रे ह 'प्योय 'खी 'सकें द हे ब 'धी ब 'बे बा कु वे पार्सु ब पदि यमणी न प्राम्य प्रमान प्रमान महित्य मिन प्रमान प्रम प्रमान प् सक्ट्रिक्षयाञ्च स्वाप्तराय्त्रियाश्च स्वापास्स्रस्ययायस्यायस्त्रिष् वाल्यस्याय्यकेषायस्त्रात्रा रटा चुटा वी द्धापटा दे दे विवा वी इसायर विवेष सर्वा वायमा दे तरे दे समस्यायर स्वा

यदे नु र्स्रे सहस्र संवित् नु सर में पर्नु मायस। दे इसस्य प्यापर सहयान र लु। के कुत्र यसग्राहरे वर्षियाची विषय स्वाप्याचित्र यादाविका हे हिंग्याया यहे याया थित। वित्र ग्राटा अर्थेट दिंग्याया वर्रे खेर्रे रो रेट स्वरं के नामवर र्स मंग्री सावव वर्से सार्दे कर विवय साव समान से साव नाम व ग्रम् पुष्तव भ्री मार्भी द्वारा के कार स्वर्ध के स्वर्ध विश्व कार स्वर्ध विश्व कार स्वर्ध कार स्वर्ध कार स्वर्ध क्रिमगुट प्युवावर्दे र सम्वेनमायवम् क्रिमायम् यम् रामु र मुकायायम् । यट म मे प्युवादे वे मुवार्ये । उंभाणिन प्यत्रित्र प्रामिन पुक्ति। देशान गानसायदे द्विन कर दिशानेन प्याप्त माया स्थापन प्राप्त स्थापन प्राप्त *ড়ৢ*८ॱॿॸ॔ॱऄज़ॱय़ॖ॓ॺॱय़ॱख़ॴॴॱऒड़ॕॸॱॺॱऄॎ॔ॱक़ॗॺॱॶख़ॱॹॖ॓ॱॡॗॕऀ॔॔॔ॸॺॱय़ऒ॔॔ॸॱॶऒढ़ॏॴॱॴॿ॓ॴॺॱय़ॸॱख़ॎ॓ड़ॕॸॱॺॱ वै। अय्यम्बर्मु न्द्ररमे युर्यन्देव बर्नु युर्ययम्बर्ह्य क्रुन्कु न्द्रश्येवस्यरम् वृ। मयि हे न्नु अर्मेद्राक्षक्षकाशीकानीत्रेनिकारित त्याप्त त्याप्त द्वाप्त क्षेत्र स्वर्थका कर्षा क्षेत्र स्वर्थका कर्षा क्षेत्र स्वर्थका कर्षा क्षेत्र स्वर्थका कर्षा करिया कर्षा कर्षा कर्षा करिया र्शेट प्रति र्हे ब रू प्रवासिन विन रू प्रविन्या में कि राया में कि राया प्रवासिन के प्रति प्रविन प्रविन प्रविन ब्रुं अप्यरात्। दे प्रदानामण्यम् अप्याप्या न्यु पाळे दायु प्याप्यानामा विवास स्वाप्याप्या विवास स्वाप्या विवास

> लाशक्ष्याचीयात्र्याच्च्यास्यात्र्याच्यात्रास्यात्र्याः भारत्वीयास्त्र्यात्र्याच्च्यात्रात्र्यात्यात्र

वेयागुराङ्गयार्थे।।।।